॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २९ अंक : ४ जुलाई २००५

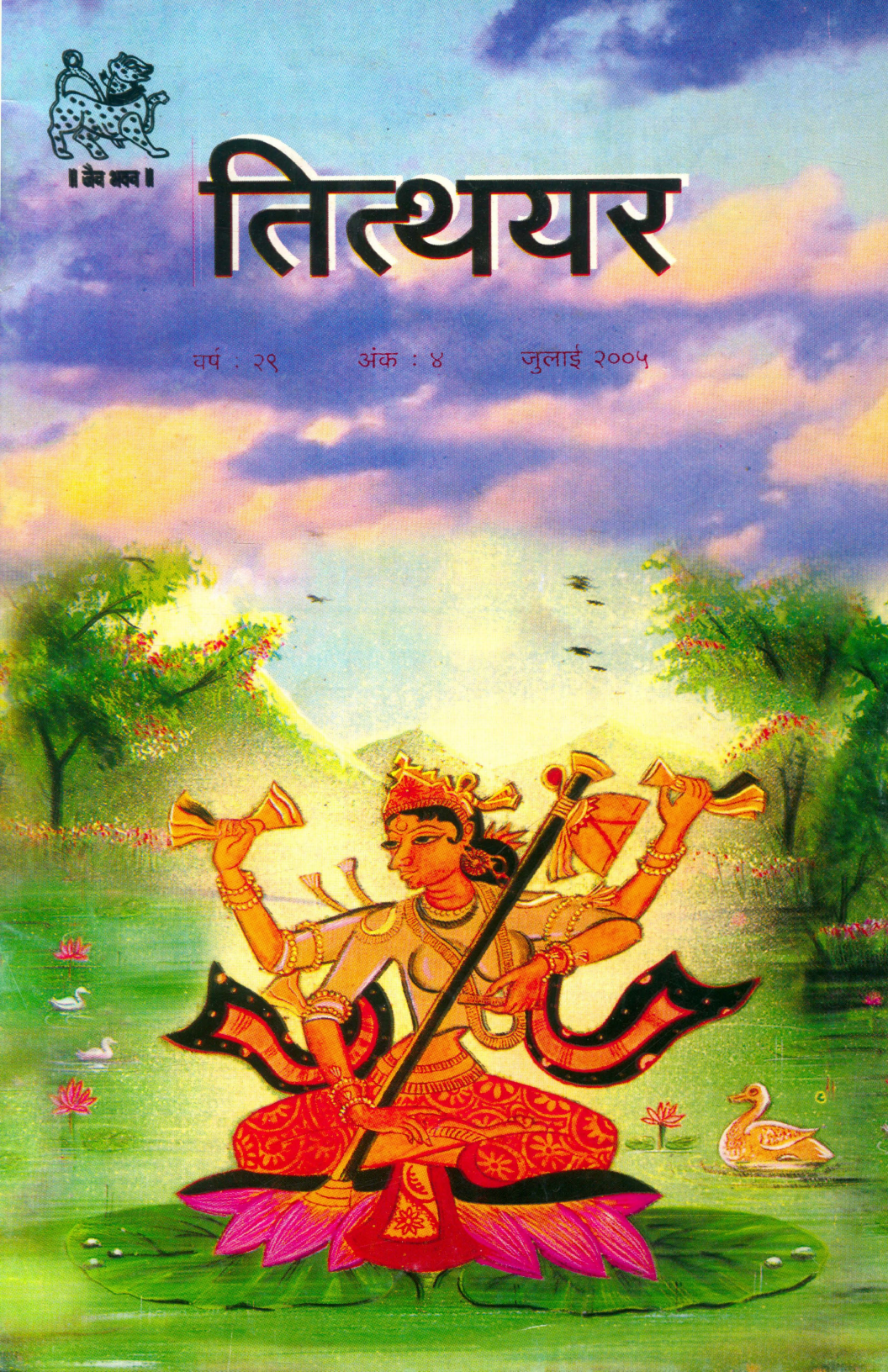

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ अंक - ४, जुलाई, २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावा	डॉ. सागरमल जैन	२४९
२.	श्रावक और कर्मादान (भाग-२)	डॉ. जीवराज जैन	२५८
३.	वैर का विपाक		२६७
४.	अकेला	भूरचन्द जैन	२७५

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावा

डॉ. सागरमल जैन

यह जैन धर्मानुयायिओं का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि यहाँ भगवान बुद्ध के बौद्ध धर्म का भारत से लोप हो जाने के बाद भी भगवान बुद्ध के जन्म स्थल, ज्ञान प्राप्ति स्थल, प्रथम उपदेश स्थल और परिनिर्वाण स्थल की सम्यक् पहचान हो चुकी है और इस सम्बन्ध में कोई मतवैभिन्य भी नहीं है, जबकि जैन धर्म के भारत में जीवन्त रहते हुए भी आज भगवान महावीर का जन्म स्थल, केवलज्ञान स्थल, प्रथम उपदेश स्थल और परिनिर्वाण स्थल– सभी विवाद के घेरे में है, उनकी सम्यक् पहचान अभी तक नहीं हो सकी है, जबकि उन स्थलों के सम्बन्ध में आगम और आगमिक व्याख्याओं तथा पुराण साहित्य में स्पष्ट निर्देश है, पूर्व के दो आलेखों में हमने उनके जन्म स्थल और केवलज्ञान स्थल की पहचान का एक प्रयत्न किया था। इस आलेख में हम उनके तीर्थ स्थापना स्थल और परिनिर्वाण स्थल की पहचान का प्रयत्न करेंगे। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जहाँ श्वेताम्बर परम्परा भगवान महावीर के तीर्थ स्थापना स्थल और परिनिर्वाण स्थल दोनों को मज्झिमापावा अर्थात् मध्यम-अपापा को मानती है, वहाँ दिगम्बर परम्परा तीर्थ स्थापन स्थल तो राजगृह के वैभारगिरि को मानती है, किन्तु परिनिर्वाण स्थल तो पावा को ही मानती है। दोनों ही पावापुरी को ही महावीर का परिनिर्वाण स्थल मानती है। किन्तु मूल प्रश्न यह है कि यह पावा कहाँ स्थित हैं।

वर्तमान में श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही परम्पराएं राजगृह और नालन्दा के समीपवर्ती पावापुरी को महावीर का निर्वाण स्थल मान रही है और दोनों के द्वारा उस स्थल पर मन्दिर आदि निर्मित है। किन्तु विद्वत वर्ग इस स्थल को महावीर का निर्वाण स्थल मानने को सहमत नहीं है। उसकी आपत्तियाँ निम्न है—

१. भगवान महावीर के निर्वाण के समय नव मल्ल, नव लिच्छवी आदि १८ गणराज्यों के राजा तथा काशी और कोशल देश के राजा उपस्थित थे (कल्पसूत्र १२७) राजगृही के समीपवर्ती पावा में उनकी उपस्थिति सम्भव नहीं हो सकती, क्योंकि राजगृह राज्यतंत्र था और मल्ल, लिच्छवी, वज्जी, वैशाली आदि के गणतंत्रात्मक राज्यों से उसकी स्पष्ट रूप शत्रुता थी, जबकि गणतंत्र के राजाओं में पारस्परिक सौमनस्य था। दूसरे काशी और कोसल के राजाओं का वहाँ उपस्थित रहना भी सम्भव नहीं था। क्योंकि राजगृह के समीपवर्ती पावा से उनकी दूरी लगभग ३०० किलोमीटर थी जबकि फजिलका या उसमानपुर के निकटवर्ती पावा समीप थी और उनके राज्यों की सीमा से लगी हुई थी।

२. यदि महावीर का निर्वाण राजगृह की समीपवर्ती पावा में होता तो उस समय वहाँ कुणिक अजातशत्रु की उपस्थिति निश्चित उल्लेखित होती, क्योंकि वह महावीर का भक्त था। किन्तु प्राचीन ग्रन्थों में कही भी उसकी उपस्थिति के संकेत नहीं है। इसके विपरीत मल्ल, लिच्छवी आदि गणतंत्रों के राजाओं की उपस्थिति के संकेत है।

३. महावीर के काल में राजगृह के समीप किसी पावा के होने के संकेत प्राचीन जैन आगमों और बौद्ध त्रिपिटक में नहीं मिलते है। जबकि बौद्ध त्रिपिटक में कुशीनगर के समीपवर्ती मल्लों की पावा के अनेक उल्लेख मिलते है। त्रिपिटक में मल्लों के कुशीनगर और पावा ऐसे दो गणराज्यों का उल्लेख है, ये मल्लगणराजा महावीर के निर्वाण के समय उपस्थित भी थे।

४. पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर राजगृह की समीपवर्ती वर्तमान में मान्य पावा ही महावीर की निर्वाण स्थली है यह सिद्ध नहीं होता है, क्योंकि वहाँ जो प्राचीनतम पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध

है, वह संवत् १२६० में अभयदेवसूरि द्वारा स्थापित चरण है। इस आधार पर भी वर्तमान पावा की ऐतिहासिकता तेरहवीं शती से पूर्व नहीं जाती है।

५. राजगृह के अतिसमीप वर्तमान में मान्य पावा में कल्पसूत्र में उल्लेखित हस्तिपाल जैसे किसी स्वतंत्र राजा का राज्य होना सम्भव नहीं है। दो गणराज्यों की राजधानी और राज्य २०-२५ मील की दूरी पर होना सम्भव है, जैसे कुशीनगर के मल्लों की और पावा के मल्लों की राजधानियाँ मात्र २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित थी। किन्तु मगध जैसे साम्राज्य की राजधानी के अति समीप मात्र २०-२५ किलोमीटर की दूरी पर हस्तिपाल जैसे स्वतंत्र राजा की राजधानी पावा का होना सम्भव नहीं था।

६. कुछ व्यक्तियों का यह तर्क है कि वर्तमान पावा को ही महावीर का निर्वाण स्थल और लछवाड़ या नालन्दा के समीपवर्ती कुण्डपुर को महावीर का जन्म स्थान मानना ही उचित है। क्योंकि ये दोनों वर्तमान पावा के इतने निकट है कि भगवान के पार्थिव शरीर की दाह क्रिया के समय भगवान के बड़े भाई नन्दिवर्धन उसमें सम्मिलित हो सके। किन्तु यह तर्क समुचित नहीं है, क्योंकि प्रथम तो नन्दिवर्धन महावीर की दाह क्रिया में सम्मिलित हुए थे, ऐसा कोई प्राचीन उल्लेख नहीं है। यदि यह माने कि १८ गणराजाओं में नन्दिवर्धन भी थे, तो वे तो पौषध के निमित्त पूर्व से ही वहाँ उपस्थित थे। पुनः वैशाली के निकटवर्ती क्षत्रिय कुण्डग्राम से भी उसमानपुर वीरभारी या फाजिल नगर के निकट सठियॉव के समीप स्थित पावा की दूरी भी लगभग १०० माईल से अधिक नहीं है, घोड़े पर एक दिन में इतनी दूरी पार करना भी कठिन नहीं है। क्योंकि अच्छा घोड़ा एक घण्टे में १० माईल की यात्रा आसानी से कर लेता है।

पुनः एक विचारणीय प्रश्न यह है कि आगमों में महावीर के पर्यानिर्वाण स्थल को मज्झिमा पावा कहा गया है। मज्झिमा शब्द की व्याख्या विद्वानों ने अनेक दृष्टि से की है, कुछ विद्वानों का कहना है मज्झिमा का अर्थ है मध्यवर्ती पावा अर्थात् उनके अनुसार उस काल में तीन पावा रही होगी। उन तीन पावाओं में मध्यवर्ती पावा को ही मज्झिमा पावा कहा गया है। वर्तमान चर्चाओं के आधार पर यदि हम यह माने कि राजगृह के समीपवर्ती पावा और पड़रौना समीप स्थित पावा की कल्पना को सही माने तो इनके मध्यवर्ती तो फाजिल नगर या वीरभारी की पावा को मध्यवर्ती पावा माना जा सकता है।

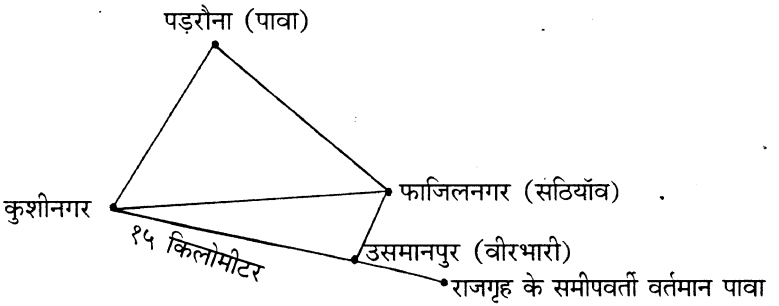

किन्तु उस काल में ऐसी तीन पावा थी इसका कोई भी प्रमाण जैनागमों और त्रिपिटक में नहीं मिलता है। यद्यपि इस कल्पना की एक फलश्रुति अवश्य है, वह यह कि राजगृह के समीपवर्ती पावा चाहे उस युग में रही भी हो, किन्तु वह मध्यवर्ती पावा (मज्झिया पावा) नहीं हो सकती है। अतः उसे महावीर की निर्वाण भूमि नहीं माना जा सकता है। वह मध्यवर्ती पावा न होकर दक्षिण या अन्य पावा ही सिद्ध होगी। क्योंकि उसके दक्षिण या पूर्व दिशा में किसी अन्य पावा के कोई भी संकेत नहीं मिले है। इस तीन पावा नगरों की कल्पना को स्वीकार करने में सबसे बड़ी बाधा यह भी है कि पुरातात्त्विक और साहित्यिक साक्ष्यों से यह बात सिद्ध नहीं होती है कि महावीर या बुद्ध के काल में पावा नामक नगर तीन थे। जो भी साहित्यिक उल्लेख उपलब्ध है वे मल्लों की मध्यदेशीय पावा के ही है, अन्य किसी पावा का कोई उल्लेख नहीं है।

कुछ विद्वानों ने तीन पावा की बात तो स्वीकार नहीं की, किन्तु मज्झिमा पावा का अर्थ यह लगाया है कि पावा नगर के मध्य में स्थित हस्तिपालराजा की रज्जुक सभा में महावीर का निर्वाण हुआ था, इसी कारण उसे मज्झिमा पावा कहा गया है। प्राकृत व्याकरण की दृष्टि से मज्झिमा पावा का विशेषण है, उसके अर्थ मध्यमा अर्थात् बीच की पावा या मध्यदेशीय पावा ऐसा होगा, किन्तु पावा के मध्य में ऐसा नहीं। क्योंकि यदि लेखक को यह बात कहनी होती तो वह पावाए मज्झ इन शब्दों का प्रयोग करता न कि मज्झिमापावा का, दूसरे महावीर जब भी चातुर्मास करते थे तो गाँव या नगर के मध्य में न करके गाँव या नगर के बाहर ही किसी उद्यान, चैत्य आदि पर ही करते थे– अतः उन्होंने यह चातुर्मास पावा नगर के मध्य से किया होगा, यह बात सिद्ध नहीं होती है। रज्जुक सभा का अर्थ भी यह बताता है कि वह स्थान हस्तिपाल राजा के माप तौल विभाग का सभा स्थल रहा होगा। क़िन्तु यह सभाभवन नगर के मध्य में हो यह सम्भावना कम ही है। ज्ञातव्य है कि जैन परम्परा में नाप के लिए रज्जु शब्द का प्रयोग मिलता है। सामान्य रूप से रज्जुक के राजकीय कर्मचारी थे जो रस्सी लेकर भूमि या खेतों का माप करते थे। ये कर्मचारी वर्तमान काल के पटवारियों के समान ही थे। राज्य में प्रत्येक गांव का एक रज्जुक होता होगा और एक छोटे से राज्य में भी हजारों गाँव होते थे अतः राज्य कर्मचारियों में रज्जुकों की संख्या सर्वाधिक होती थी अतः उनकी सभा हेतु कोई विशाल भवन होगा। महावीर ने यह स्थल चातुर्मास के लिये इस कारण से चुना होगा कि इसमें विशाल सभागार रहा होगा। ऐसा सभागार महावीर के विशाल संघ के चातुर्मास का उपयुक्त स्थल हो सकता था, किन्तु यह नगर के मध्य हो भी यह सम्भावना कम ही है। इस प्रकार मज्झिमा का अर्थ न तो मध्यवर्ती पावा होगा और न पावा के मध्य में ऐसा होगा।

अब हम मज्झिमा शब्द के तीसरे अर्थ मध्यदेशीय पावा की ओर आते है तो इसका तात्पर्य यह होगा कि वह पावा नगर मध्यदेश में स्थित था। ज्ञातव्य है

कि पाली त्रिपिटक और बुद्धकालीन भूगोल में मध्यदेश की सीमाएं इस प्रकार थी– मध्यदेश के पूर्व में विदेह पश्चिम में कौशल, उत्तर में शाक्य / मौरिय (नेपाल का तराई क्षेत्र) तथा दक्षिण में काशी देश स्थित थे। इसका अर्थ है कि मज्झिमापावा मध्यदेश में स्थित थी, जबकि वर्तमान में मान्य राजगृह की समीपवर्ती पावा मगधदेश में स्थित है, अतः मज्झिमा विशेषण से यह बात सिद्ध होती है कि महावीर के निर्वाण स्थल के रूप में मान्य पावा उस काल के मध्यदेश अर्थात् मल्लों के गणतंत्र में स्थित थी। इस आधार पर कुशीनगर से लगभग २० किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित फाजिलनपर, सठियाँव या उसमानपुर वीरभारी के समीपवर्ती क्षेत्र के पावा होने की सम्भावना अधिक समीचीन लगती है क्योंकि उसकी पुष्टि बोद्ध साहित्यिक साक्ष्यों से होती है। मध्यदेश में स्थित इस पावा की पहचान करने में भी कठिनाई यह है कि इस सम्बन्ध में विद्वानों में अभी मतैक्य नहीं हो पाया है। खेतान जी आदि कुछ विद्वान वर्तमान पड़रौना के सिद्धवा को पावा मानते है, तो कारलाइल प्रभूति कुछ विद्वानों ने फाजिलनगर सठियावं को पावा माना है। श्री ओमप्रकाश लाल श्रीवास्तव ने श्रमण जनवरी-जून २००० में प्रकाशित अपने लेख में एक नया मत प्रस्तुत करते हए, उसमानपुर के निकटवर्ती वीरभारी नाम टीले को पावा बताया है। अतः चाहे राजगृही के समीपवर्ती पावा को महावीर निर्वाण स्थल नहीं भी माना जाए और मध्यदेश स्थित मल्लों की पावा को ही महावीर की निर्वाण भूमि माना जाये, फिर भी उस स्थान का सम्यक् निर्णय करना अभी शेष है।

मध्यदेश स्थित मल्लो की राजधानी पावा की पहचान का सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक साक्ष्य यह है कि वह भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण स्थल कुशीनगर से ३ गव्यूति की दूरी पर स्थित थी। किन्तु कुशीनगर को केन्द्र मानकर यदि तीन गव्यूति रेडीअस से सर्कल (वृत्त) खींचा जाये तो उसमें तो चारों दिशाओं के अनेक स्थल आयेंगे। अतः इस आधार पर भी सम्यक् निर्णय पर कैसे पहुँचे? इस हेतु हमें बुद्ध के अन्तिम

यात्रामार्ग के आधार पर निर्णय लेना होगा। अपने जीवन की इस सन्ध्या में बुद्ध किस मार्ग से कुशीनगर से आये थे सम्भावनाएं तीन हो सकती है, राजगृह वैशाली मार्ग से, श्रावस्ती के मार्ग से या शाक्य प्रदेश अर्थात् कपिलवस्तु (नेपाल की तराई) से। यदि वे श्रावस्ती से आ रहे थे तो पावा की खोज कुशीनगर के पश्चिम में करनी होगी। यदि वे शाक्य राज्य से आ रहे थे तो पावा की खोज कुशीनगर के उत्तर में करनी करनी होगी किन्तु यदि वे राजगृह या वैशाली से आ रहे थे तो हमें पावा की खोज कुशीनगर के दक्षिण पूर्व में करनी होगी। पालि साहित्य से जो सूचनाएं हमें प्राप्त है उस आधार पर उनकी यह यात्रा राजगृह–वैशाली की ओर से थी, अतः पावा की खोज कुशीनगर के दक्षिण पूर्व में करनी होगी। इस आधार पर पड़रौना के सिद्धवा को पावा मानने की सम्भावना निरस्त हो जाती है, क्योंकि पड़रौना कुशीनगर (वर्तमान कसाया) के ठीक उत्तर में है। यद्यपि भगवान महावीर निर्वाणभूमि पावा नामक भगवतीप्रसाद खेतान की पुस्तक की भूमिका में उनके मत का समर्थन करते हुए मेरा झुकाव भी पड़रौना को पावा मानने के पक्ष में था। किन्तु निम्न तीन कारणों से अब मुझे अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना पड़ रहा है—

१. पड़रौना के पावा होने के पक्ष में आज तक कोई भी ठोस साहित्यिक और पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। आदरणीय भगवतीप्रसाद खेतान द्वारा दिये गये तर्कों और साक्ष्यों से यह तो सिद्ध होता है कि राजगृह के समीपवर्ती पावा वास्तविक पावा नहीं है, किन्तु पडरौना का सिद्धवा स्थान ही पावा है, यह पूर्णतया सिद्ध नहीं होता है।

२. दूसरे पडरौना राजगृह-वैशाली कुशीनारा के सीधे या सरल मार्ग पर स्थित नहीं है, राजगृह या वैशाली से पडरौना होकर कुशीनारा आना एक चक्करदार रास्ता है। भगवान बुद्ध की इस यात्रा का

लक्ष्य कुशीनारा था अतः उत्तर में जाकर पुनः दक्षिण में आने वाले मार्ग का चयन उचित नहीं था।

३. जैन व्याख्या साहित्य के अनुसार भगवान महावीर ने अपने कैवल्य स्थल से बारह योजन चलकर पावा में अपने धर्म तीर्थ की स्थापना की थी। मेरी दृष्टि में वर्तमान जमुई के समीपवर्ती लछवाड़ महावीर का जन्म स्थल न होकर कैवल्यज्ञान स्थल है। वहाँ से सीधे मार्ग से पावा की दूरी लगभग १९० किलोमीटर से अधिक नहीं होना चाहिए। पडरौना को पावा मानने पर यह दूरी लगभग २५० से अधिक हो जाती है। अतः पडरौना को पावा मानने में अनेक कठिनाईयाँ है।

कुशीनगर से दक्षिण पूर्व में पावा को मानने के सम्बन्ध में भी अब हमारे सामने दो विकल्प है? फाजिलनगर सठियाव और उसमानपुर-वीरभारी। यद्यपि कार्लाइल आदि विद्वानों ने फाजिलनगर सठियाव को पावा मानने के पक्ष में अपना मत दिया था। उसके परिणामस्वरूप गोरखपुर, देवरिया आदि के कुछ दिगम्बर जैनों ने और कुछ प्रबुद्ध वर्ग ने उसे महावीर की निर्वाण भूमि मानकर मन्दिर धर्मशाला आदि भी बनवाये है। किन्तु श्री ओमप्रकाशलाल का कहना है कि वहाँ से जो मृणमुद्रा मिली है, उससे वह स्थल श्रेष्ठिग्राम सिद्ध होता है, पावा नहीं। पुनः वह स्थल भी कुशीनारा से १८-२० मील पूर्व में ही है, दक्षिण पूर्व में नहीं है। इस दृष्टि से उसमानपुर वीरभारी को पावा मानने का पक्ष अधिक सबल प्रतीत होता है। इस सम्बन्ध में सबसे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य वहाँ से 'प(ा)वानारा' के उल्लेख युक्त मृणमुद्रा का प्राप्त होना है। जिस प्रकार प्राप्त मृण्मुद्राओं के आधार पर उन उन ग्राम या नगरों की पहचान पूर्व में इतिहासकारों के द्वारा की गई, उसी प्रकार इस मुद्रा के आधार पर इसे पावा स्वीकार किया जा सकता है। पुनः महावीर के कैवल्य स्थल से इस स्थल की दूरी भी सरल सीधे मार्ग से १२-१३ योजन के लगभग सिद्ध होती है। ज्ञातव्य है कि योजन की लम्बाई को

लेकर भी विभिन्न मत है यह दूरी एक योजन— ९.०९ या लगभग १५ किलोमीटर मानकर निश्चित की गई है।

मैंने इस पावा की अवस्थिति को उसमानपुर के समीप और कैवल्यस्थल लछवाड़ को जमुई के समीप मानकर नक्शे के स्केल आधार पर दूरी निकाली थी, जो लगभग १९० किलोमीटर आती है। अतः उसमानपुर वीरभारी को पावा मानने पर आगमिक व्याख्याओं की १२ योजन की दूरी का भी कुछ समाधान मिल जाता है।

फिर भी जब तक फाजिलनगर के डीह और वीरभारी के टीलों की खुदाई न हो और सबल पुरातात्त्विक साक्ष्य उपलब्ध न हो इस सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय देना समुचित नहीं होगा, तथापि पावा की पहचान के सम्बन्ध में जो विभिन्न विकल्प है, उनमें मुझे उसमानपुर वीरभारी का पक्ष सबसे सबल प्रवीत होती है और वर्तमान में राजगृह के समीपवर्ती पावापुरी को महावीर की निर्वाणभूमि पावा मानना संदेहास्पद लगता है।

----------O----------

श्रावक और कर्मादान (भाग-२)

डॉ. जीवराज जैन

९. १५ कर्मादान का खुलासा : सीधे सातवें व्रत में जो १५ कर्मादान बताये हैं, वे कर्म-बंधन के हेतु बनते हैं। इनमें ७ प्रकार के कर्म (कम्मे) वाले शिल्प व Skilled Craft व ८ प्रकार के व्यापार-धंधे सम्मिलित हैं।

a) जो भी लोग शिल्प व उद्योग में काम करते हैं, वे निम्नलिखित कर्मादान के महारम्भी बन सकते हैं—

i. इंगाल कम्मे (अंगार कर्म) : वैसे उद्योग जिनमें फाउण्ड्री (ढलाई), फोर्ज (लोहार खाना) व मशीन-शोप चलता है, यो जहाँ भट्टियों व बिजली की पॉवर का खूब उपयोग होता है। ये प्रायः हर उद्योग व मेनुफेक्चरिंग इंडस्ट्री का आधारभूत कर्म है। कोयला बनाने के उद्योग के अलावा विद्युत उत्पादन आदि के कर्म भी इसी के तहत आते हैं।

ii. साड़ी कम्मे : वाहन (गाड़ी, मोटर व उसके कल-पुर्जे) बनाने वाले उद्योगों में काम करना। उनको अंगार कर्म (सीधा) के अलावा शकट (साड़ी कर्म) कर्म भी लगता है।

iii. जंतपीलन कर्म : खाद्य तेल उद्योग व कपास के उद्योग में काम करना। उनको अंगार कर्म के अलावा यह कर्म भी लगता है।

iv. फोड़ी कम्मे : दालें बनाने व पीसने वाले उद्योग। खेती व खनन उद्योग। इसमें काम करने वाले फोड़ी कर्म के अलावा अंगार कर्म के भी भागी बन सकते हैं।

उपरोक्त सभी उद्योग व शिल्प में अंगार कर्म की मात्रा कम-ज्यादा हो सकती है। जैसे ढलाई, लोहार खाना व बिजली उत्पादन में काम करने वाले सीधे अंगार कर्म का कर्मादान करते हैं। लेकिन अन्य (ii), iii), iv)) तीनों में ज्यादातर बिजली से चलने वाली मशीनों का ही अंगार-कर्म लगता है।

b) निम्नोक्त धंधों के करने में (कर्म) प्रायः एक ही कर्मादान का योग रहता है—

i. वण कम्मे : वृक्ष, फल-फूल, पत्ते काटकर व्यापार करना। वनस्पति आधारित कर्म करना।

ii. भाड़ी कर्म : वाहन व मकान आदि भाड़े में देना व उनका फायनेन्स करना।

उपरोक्त दोनों में अंगार-कर्म प्रायः नहीं लगता है।

iii. निल्लंछण कम्मे : जानवरों के अंगोपांगों का छेदन भेदन करना। यह कर्म साधारणतया जैन श्रावक नहीं करता हैं।

c) निम्मोक्त वस्तुओं का व्यापार करने वाले वाणिज्य-कर्मादान, के महारम्भी बनते हैं—

i. दंतवाणिज्जे : त्रसकायिक जीवों के अवयवों का व्यापार करना, जैसे दांत, केश, चमड़ा, शंख आदि का व्यापार करना।

ii. लक्खवाणिज्जे : जिसमें त्रसकाय जीवों की बहुत विराधना हो, वैसे पदार्थों का व्यापार करना। जैसे लाख, चपड़ी, रेशम, सड़ा अनाज आदि का व्यापार करना।

iii. केस वाणिज्जे : केशवाले जीव जैसे–गाय, भैंस, भेड़, पक्षी, घोड़ा आदि का व्यापार करना।

iv. रसवाणिज्जे : घी, तेल, गुण, शक्कर, मदिरा, पेट्रोल, शहद आदि रंसवाले या प्रवाही पदार्थ का व्यापार करना। रस–पदार्थ के उत्पादन उद्योग में कार्य करने वालों को तो उद्योग-कर्मादान भी लगता है।

v. विस-वाणिज्जे : संखिया आदि विष, तलवार, पिस्तौल आदि अस्त्र-शस्त्र, टिड्डी, मच्छर मारने की दवा, टिकिया आदि का व्यापार करना।

उपरोक्त ५ प्रकार के व्यापार—कर्मादान में से ४ कर्मादान का जैनी श्रावक थोड़े से विवेक व संयम से परहेज कर सकते हैं। केवल चौथा रस-

वाणिज्जे में विगय वाले खाद्य-पदार्थ होने से श्रावक इनका व्यापार करता है। इस तरह के व्यापार का जैनियों में प्रचलन है। लेकिन मदिरा / शहद जैसे महाविगयी पदार्थों के व्यापार से परहेज रखा जा सकता है।

d) निम्नोक्त ३ प्रकार के ठेकों का काम करने से श्रावक लोग परहेज कर सकते हैं—

i. दवग्गिदावणया : खेत, जंगल, घास आदि को अग्नि से जलाकर साफ करने का ठेका। (यह अग्निकाय का है, लेकिन अंगार कर्म से भिन्न प्रकार का कर्मादान माना गया है।)

ii. सरदहतलाय सोसणया : जल यानि अप्काय का उपयोग तथा उसके आश्रित जलचर-त्रसकायिक जीवों की विराधना का काम। जैसे फाउंटेन, एक्वेरियम बनाने का काम। तालाब आदि को सूखा कर खेती लायक बनाना। नहरें आदि बनाकर सिंचाई परियोजना का ठेका। आधुनिक जमाने में ऐसे ठेकों की बहुलता है। नहर आदि परियोजनाओं से जैनी लोग काफी जुड़े हुए हैं।

iii. असईजन पोसणया : शिकारी कुत्ते, वेश्यावृत्ति आदि का पोषण करना। साधारणतया जैनी लोग इससे परहेज रखते हैं।

e) उपरोक्त १५ कर्मादान का विश्लेषण समझने से यह पता चलता है कि देश-विरत श्रावक के लिये उदरपूर्ति के अनेक ऐसे साधन हो सकते हैं, जो पाप रहित या अल्पतर पाप वाले हैं। अल्पारम्भ से जब जीवन निर्वाह हो सकता है, तब अनन्त जीवों की घात कर आत्मा को गुरूकर्मी बनाना विवेकशील श्रावक के लिए उचित नहीं है। भगवान महावीर ने विचार को सम्यग् बनाने पर बल दिया। विचारशुद्धि होने से आचार आसानी से शुद्ध होंगे। कुत्सित या लोक निन्दित कर्म करना या घातक पदार्थों का व्यापार करना भी महारम्भ में रखा गया।

निम्नोक्त व्यापार में कर्मादान का सीधा हेतु नहीं बनता है—

i) पंसारी का व्यापार : अनाज का व्यापार (घी, गुड़ पदार्थ का भी व्यवहार सम्मत व्यापार है),

ii) कपड़े का व्यापार,

iii) सोने चांदी का व्यापार,

iv) शाकाहारी (निरामिश) दवाइयों का, अस्पताल का व्यापार, धंधा,

v) डॉक्टर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, टेक्स कंसलटेन्ट (सेवा प्रदान करने वाले) आदि प्रोफेसन, शिक्षा व प्रशिक्षण का काम करने वाले।

१०. उद्योगजा हिंसा में विवेक—

उद्योगजा हिंसा में विवेक तथा व्यापार चुनाव के साधारण नियमः हर गृहस्थ को अपने व्यापार में जागरुकता रखने के लिये कुछ नियम जानना व समझना बहुत जरूरी है। उद्योग व व्यापार का रास्ता चुनने के पूर्व युवक या श्रावक को सर्वप्रथम हिंसा व अहिंसा के उपरोक्त आयाम को व विश्लेषण को भलीभांति समझ लेना चाहिए। इसमें साधु महाराज या ज्ञानी श्रावक से मार्ग दर्शन मिल सकता है। तत्पश्चात् उपलब्ध संभावित उद्योगों या व्यापार में चुनाव करने के लिए वह विवेक रखे कि अपनी योग्यता व रूचि के अनुसार ऐसा उद्योग व व्यापार को चुने जिसमें अपेक्षाकृत कम हिंसा होती हो।

निम्नोक्त बिंदुओं से सही मार्ग दर्शन मिल सकता है—

१) वो धंधे जिनमें प्रत्यक्ष रूप में त्रसकाय जीवों की हिंसा होती हो, (जैसे–बूचड़, खाने, रेशम बनाने के धंधे आदि), बिल्कुल त्याग करें।

२) ऐसे धंधे व व्यापार जिनसे उपरोक्त कार्यों की अनुमोदना होती हो या प्रोत्साहन मिलता हो। जैसे अनजाने काम के लिए जानवर बेचना या रेशम का धंधा करना। माँस का व्यापार करना।

३) कुव्यसन वाले पदार्थों का, सामग्री का व्यापार करना। मदिरा बनाना व बेचना।

४) बचे हुए धंधों में से उन धंधों को या उद्योग को चुनना, जिसमें प्रत्यक्ष रूप में स्थावर जीवों की विराधना अपेक्षाकृत कम होती

हो। ईंटा भट्टा या अन्य कोई भी भट्टा (बिजली की व अन्य आग की भट्टी–जैसे ब्लास्ट फर्नेस, धातु गलाना आदि) से परहेज करना।

यदि अन्य विकल्प उपलब्ध न हो तो वैसे धंधों का अल्पीकरण या सीमाकरण करना चाहिये।

ऐसे धंधों को मालिकाना रूप में चलाना या वैसे धंधों में एक इकाई रूप में नौकरी करना, भिन्न प्रकार के भाव में आते हैं। पहली श्रेणी आवश्यक है, समाज व राष्ट्र के लिए। यदि वैसी भावना निहित है तब तो अल्पीकरण करके चलाने में हिंसा का अल्पीकरण होता है। लेकिन केवल उद्योग को उद्योग की दृष्टि से चलाना है, जैसे अपने उद्योग की सफलता के लिए असीमित विस्तारीकरण, अन्य देशों में ऐसे कारखाने स्थापित करना इत्यादि, तब धंधे का त्याग करना चाहिए। नौकरी पेशेवाले की भावना भिन्न होती है। भट्टों को प्रत्यक्ष रूप में चलाने का काम करना तो उसकी रोजमर्रा की भावनात्मक अनुमोदना है। उससे हट जाना श्रेयस्कर है। नहीं तो यह लोगों में हिंसा / अहिंसा के फर्क को न समझने का कारण निमित्त बन सकता है। इतनी जागरुकता भी रखें कि अन्य विकल्प प्रस्तुत होते ही इससे हट जाना चाहिए।

५) इनसे बेहतर धंधे व उद्योग वो हैं, जिनमें प्रत्यक्ष रूप से अग्निकाय व अप्काय के जीवों की भी हिंसा न हो। जैसे लोहा या धातु बेचना। मशानें चलाना या इनसे संबंधित वस्तुओं का व्यापार करना।

६) खेती करना व खनन कार्य करना। हालाकि इनमें प्रत्यक्ष स्थावर जीवों की हिंसा होती है। लेकिन समाज व देश के लिए आवश्यक है। अतः ऐसी भावना द्वारा केवल अर्थजा हिंसा की परिधि में ही रहने की जागरूकता रखना। कभी अनर्थजा के दायरे में प्रवेश नहीं करने का विवेक रखना चाहिए।

उपरोक्त वर्णित उद्योग में काम करने वाले श्रावक को, जहाँ-जहाँ प्रत्यक्ष रूप में स्थावर जीवों की विराधना का निमित्त बन रहा है, वहां मन में आत्मग्लानि का भाव रखना चाहिए। यानि उन जीवों की हिंसा के प्रति संवेदनशीलता नहीं खोनी चाहिए। उसके प्रति जागरुकता रखते हुए यह भाव रखे कि समय आने पर उसका सीमाकरण करूँ व त्याग करूं। ऐसी मनः स्थिति रहने पर उसका करुणा-स्वभाव पोषित होता रहेगा। घाती कर्म का बंध नहीं होगा।

७) अपने कार्यों में, व्यापार में यह विवेक भी रखें कि हमारी किसी भी वृत्ति से, कार्य स्थान से अन्य लोगों को त्रसकाय की हिंसा या स्थावर जीवों की महा-हिंसा करने का (ज्यादा संख्या में) हमारा प्रोत्साहन या हमारी अनुमोदना न दिखाई दे। यदि दिखती है तो वो कार्य न करें, जैसे मांसाहारी होटल / रेस्ट्रां में बैठकर शाकाहारी भोजन करना। बार में बैठकर शीतल पेय पीना। अनजाने में कोई दर्शक यह समझने न लगे कि हम मांसाहार या उससे परहेज करना उचित नहीं समझते या शराब को पीना अनुचित नहीं समझते।

११. आधुनिक विशेष धंधे :– अब हम कुछ धंधों का विशेष विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं :-

१) गिरवी : इसमें केवल सामान रखकर बदले में ब्याज पर पैसा दिया जाता है।
उद्देश्य : ग्राहक को अपनी रोजमर्रा की वस्तुओं के लिए या कभी-कभी व्यापार के लिए पैसा दिया जाने का उद्देश्य है। ग्राहक की नियत के बारे में कोई पूछताछ नहीं होती है।

कर्मबंध की विविक्षाः १) अपना अर्थ-उपार्जन बिना ज्यादा आरम्भ/समारम्भ के हो जाता है। ग्राहक हो सकता है, शराब पीयेगा, मांस खरीदेगा। लेकिन वैसी तो करुणा / दान में भी संभावना रहती है। अतः यह अच्छा धंधा माना जा सकता है।

२) फायनेंस : उपकरण, वाहन खरीदने के लिए सूद पर रूपये देना।
उद्देश्य : ग्राहक अपने अर्थोपार्जन के लिए वाहन या विलासिता के लिए घर-सामान खरीदने के लिए पैसा लेता है।

कर्मबंध की विविक्षा : इन उपकरणों का उपयोग आगे हिंसा का निमित्त बनता है, ऐसी जानकारी तो रहती है।
अतः परोक्ष रूप में ही हिंसा की अनुमोदना होती है। प्रत्यक्ष में कोई निर्देशन व सीधा संबंध नहीं रहता है। लेकिन इस हिंसा की मात्रा का विवेक समझा जा सकता है। किसी के जीविकोपार्जन के लिए किया गया अनुमोदन है। अब वो धंधा अधिक हिंसा का न हो या वो कुव्यसन का पोषण न करता हो, यह ध्यान / गवेषणा पूर्वक रखा जा सकता हैं। जैसे बूचड़खाने को लिए या मदिरा बनाने के लिए उपयोग में न हो, इत्यादि।

३) शेयर खरीद-फरोक्त :
क्या है? कम्पनियों के शेयर खरीदना, जिनके दाम बढ़ने की संभावना हो। तथा उनका लाभांश रूप में या मूल्य वृद्धि रूप में मुनाफा प्राप्त करना।
उद्देश्य : केवल कंपनी की कार्यक्षमता, कुशलता व भविष्य की योजनाएं नजर में रखी जाती है। जिससे लाभ की संभावना ज्यादा हो। केवल उसके उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर ही लोग निर्णय लेते हैं।

विविक्षा कर्म-बंध की :

a) इन संस्थाओं में प्रत्यक्ष भागीदारी व निर्देशन नहीं रहता है।
b) परोक्ष रूप में उनकी अनुमोदना होती है। इसमें केवल एक करण हैं। करू नहीं, कराऊँ नहीं का करण नहीं लगता है। यह व्यापार की श्रेणी का काम है। न कि कम्मे की। अतः श्रावक के करने योग्य है। केवल महाहिंसक कंपनियों से बचने का विवेक रखना है, जिससे उन धंधों की अनुमोदना न हो।
iv) शेयर दलाली : क्या है? जो भी लोग शेयर खरीद बिक्री करते हैं, उनको सुविधा प्रदान कराना तथा उस सर्विस के बदले में दलाली लेना।

उद्देश्य : लोगों को खरीद-बिक्री करने की सुविधा देना। कौन कंपनी का शेयर खरीदा जाता है, उस निर्णय में भागीदारी नहीं के बराबर रहती है।

विविक्षा कर्म-बंध की :

a) कंपनियों के निष्पादन में कोई भागीदारी व निर्देशन में भागीदारी नहीं रहती है।

b) प्रत्यक्ष रूप से कंपनी के कार्य में अनुमोदना नहीं के बराबर रहती है। परोक्ष प्रोत्साहन होता है, लेकिन यह विवेक रखना है कि महाहिंसक कंपनियों (बूचड़ खाने व शराब कंपनी) की अनुशंसा नहीं हो।

c) यह श्रावक के करने योग्य व्यापार है, ऐसा समझ में आता है।

v) ट्रेडिंग टर्मिनल : खुद फाटका नहीं करते हैं, लेकिन कराते हैं। उनकी कभी-कभी अनुमोदना भी करते हैं। अतः उपरोक्त प्रकार का निमित्त तो बैठता ही है। लेकिन इसके अलावा जुआ के प्रकार का जो काम हो रहा है, उसके कुव्यसन-प्रवृत्ति बढ़ाने का तो काम होता है। हालांकि अर्थशास्त्री इसको जुआ न मानकर एक आवश्यक आर्थिक प्रक्रिया मानते हैं।

vi) वकालत : चूंकि वकील शुद्ध न्याय की प्राप्ति में सहायता देता है, अतः सामान्यतः यह पेशा महारम्भी नहीं लगता है। लेकिन सत्य / असत्य की परवाह न करके केवल आर्थिक लाभ के लिए सत्य को असत्य सिद्ध करना, धन्धे का दुरुपयोग करना महारम्भ है।

vii) इंजिनियरिंग का पेशा या व्यवसाय :

a) Direct production में काम करना।

b) Design में या

c) सलाहकार रूप में कार्य करना,

d) Computers में (सहयोगी काम) जैसे HRD, Materials stores आदि में।

इन सबमें अलग-अलग प्रकार की परिस्थितियाँ बनती हैं। प्राथमिक भावनाओं के व आसक्ति के अनुरूप कर्म का बंध बनता है। एक मूल सिद्धांत, जो सामने उभरकर आया है, वह यह है कि भावना में यदि अनासक्ति है तो ये जीवन-निर्वाह के साधन परिग्रह या भोग नहीं कहलाते है।

१२) सारांशत :

a) हर धंधे में श्रावक को चाहिए कि अपने धंधे में लोभ की मात्रा कम रखे या बढ़ने नहीं दे।

b) संबोधि में बताये सिद्धान्त के अनुरूप हर धंधे में अपनी आसक्ति क्षीण रखना।

c) महाहिंसा वाले धंधों, व वैसी कंपनियों की अनुमोदना से बचना। निरर्थक हिंसा का त्याग करना।

d) प्रत्येक कार्य को हिंसा / अहिंसा या महारंभ / अल्पारंभ की तुला पर तौलना चाहिए।

e) जीवन यापन के प्रत्येक कार्य को हिंसा-अहिंसा के विवेक में हमारी संवेदनशीलता जागृत रहे जिससे हम हिंसा के अल्पीकरण में प्रयासरत रह सकें। अपना धंधा निष्काम भाव से करें।

f) अपने कर्तव्य की अवहेलना करना योग्य नहीं है। लेकिन निजी स्वार्थ के लिए हिंसा को त्याज्य समझें।

संदर्भ :

१. संबोधि – आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूँ।

२. अध्यात्मिक आलोक – आचार्य श्री हस्तीमलजी, सम्यग्प्रचारण मंडल, जयपुर।

३. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र – अर्थ सहित, अ. भा. सु. जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर।

वैर का विपाक

मान लो कि अपने कपटी आमंत्रण की गंध उन्हें लग जाए तो? दुर्मति कपटपूर्ण हंसी से बोलाः

यह बच्चों का खेल तो नहीं है, जो मेरे और आपके सिवा तीसरा कौन जान सकता है? आमंत्रण देने में आपको भय लगता हो तो मैं आपको एक दूसरा मार्ग भी बताता हूँ। आपको अभिषेक के पूर्व वे अवश्य ही अपने पास बुलायेंगे। मेरी सलाह यह है कि आप तब उन्हें मिलने न जाएं। इससे वे स्वयं ताकीद करने को आपको बुलाने के लिए आएंगे। बस उसी समय पासा फेंक देना होगा।

आनन्द के गले यह बात उतर गई। एक तो उसको एकदम सत्ताधारी बनना था। फिर भविष्य में कोई चुभनेवाला काँटा नहीं रहे उसके लिए पहले से ही सारा मार्ग साफ भी वह कर देना चाहता था। सिंह महाराजा को जाल में फंसाए बिना ये दोनों हेतु पूरे-पूरे सध ही नहीं सकते थे।

जो सिंह महाराजा अपने अतिशय शत्रु तक को भी क्षमा कर सकते हैं, अभयदान के साथ आश्रय भी दे सकते हैं, जो अजातशत्रु जैसे हैं, संसार की मिथ्या जाल-जंजाल में से जिनकी वृत्ति उपराम पा गई है, अंतर्मुख हो गई है, उनको धोखा देना या धोखा देकर कैद में डालना कठिन बात नहीं है। धोखे से फंसाना तो एक निकृष्टतम कार्य है और आनन्द कुमार ने इसी अधम शस्त्र का पिता के विरुद्ध उपयोग किया। सिंह महाराजा ज्यों ही अपने पुत्र को बुलाने के लिए उसके आवास में पधारे त्यों ही उसके मनुष्यों ने उन्हें एकाएक धर पकड़ा और कैद कर लिया। अपने ही पुत्र के हाथ से ऐसा नीच कृत्य हुआ देखकर भी महाराजा ने तो उपशम का ही आलंबन लिया। उनका जीवन के प्रति अथवा भोगोपभोग के प्रति मोह ममता नहीं रहा।

आनन्द की माता कुसुमावली ने जब पुत्र के इस अधम आचरण की बात सुनी तो वह एकदम मूर्छित हो गई। उसने अपने स्वप्न और दोहद का स्मरण हो आया। जिस पुत्र का वह जन्मते ही परित्याग करने को तैयार हुई थी और मात्र महाराजा के आग्रह से ही जिसका उसने पालन-पोषण किया था, उसी पुत्र के हाथों यह अपकृत्य हुआ है, यह जानकर उसे अपार व्यथा हुई। महाराजा की वाणी वह अभी तक भी भूली नहीं थी। 'सगा पुत्र ही यदि पिता का घात करने की इच्छा करे तो उसमें उस पुत्र का उतना नहीं जितना कि पूर्व कर्म का दोष है। यह तो वैर का ही विपाक है ऐसा समझ धैर्य के साथ सहन करने में ही वास्तविक कल्याण है।'

कुसुमावली ने पुत्र आनन्द के पास जाकर बहुत प्रार्थना की, परन्तु वह पूर्ण निष्फल हुई।

सिंह महाराज ने कैदी हो जाने के पश्चात् भी किसी भी प्रकार की धमाचौकड़ी नहीं की। संसार भी तो एक कैदखाना ही था? ऐसे विरागवासित विचारों ने उन्हें दुर्ध्यान से विमुख रखा। अन्त में परम शांति से जीवन का अंत लाने को उन्होंने अनशन व्रत स्वीकार कर लिया।

आनन्दकुमार से यह भी सहन नहीं हुआ। मुझको जगत के सामने अधिक लांछित तिरस्कृत बनाने के लिये जानबूझकर ही सिंह महाराजा ने भूखा रहना शुरू किया है, यह जानकर वृद्ध के इस आचरण पर उसे अत्यधिक क्रोध आया। ऐसे को जीवित रखना भी जोखिम है ऐसा निर्णय कर उसने स्वयं ही जाकर सिंह महाराजा का वध कर दिया।

प्राणांत कष्ट होने पर भी महाराजा ने अपने धैर्य और संयम को बनाये रखा। आनन्द विचारा करता भी क्या? कर्मविपाक के हाथ में वह तो मात्र हथियार बना है और महाराजा की यह विचारभेदी उचित थी। जिस अग्निशर्मा को अजानते सताया था तीन-तीन बार महीने-महीने के अंत में पारणा के लिए आमंत्रित करके भी पीछे भूखा लौटाया था और जिसने मरते

मरते अपने वैरवृत्ति को ही तीक्ष्ण धारदार बनाया था वही अग्नि शर्मा मात्र देह-वस्त्र बदल पुत्र आनन्दरूप में यहाँ अवतरित हुआ था और कर्म की फलदात शक्ति के आगे वह भी विवश था, लाचार था।

तृतीय खण्ड

देखो मैं अब तुमको अन्तिम बार कह देता हूँ कि एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती हैं या तो मेरा त्याग करो, मुझे राजी खुशी से चली जाने दो अथवा तुम्हारे इस कुलांगार को फिर किसी दिन भी इस घर में नहीं पैर रखे ऐसा कहकर निकाल दो। प्रति दिन मुझसे यह हृदयशूल नहीं सहा जा सकता है।

मैं यह सब समझता हूँ। परन्तु पेट की संतान को कहां निकाला जाए? कोई निकट का संबंधी या और कोई आश्रित होता तो उसे निकाल देते। परन्तु अपना यह शिखी तो अभी बालक ही है। हम ही यदि इससे शत्रु जैसा बर्ताव करेंगे तो इस बेचारे का है ही कौन? जैसे तैसे थोड़े वर्ष निकाल ही दो। बड़ा होने पर और समझ आने पर जब इसके पंख आएंगे तो स्वयं यह चला जाएगा और कहेगा कि अब यह घर मुझे खाने को दौड़ता है।

कोश नगर का एक ब्राह्मण अपनी स्त्री जालिनी को इस प्रकार समझा रहा था। स्त्री दुराग्रह पकड़कर बैठ गई थी और वह एक घड़ी भी अपने पुत्र को घर में रखने को तैयार नहीं थी। वह कहती थी इसको यहां से जाना ही होगा।

पुत्र स्वयं जानता था कि जालिनी उसकी सगी मां होते हुआ भी वह उसके स्नेह से वंचित है। इतना ही नहीं अपितु जिस पुत्र को देखकर जिसकी आंखे ठंडी होना चाहिए, जिसमें वात्सल्य उभरना चाहिए, उसके स्थान में पुत्र शिखी को देखते ही उसकी आंखों में क्रोध की अग्नि भभक उठती है और हृदय पर उफनता हुआ तेल गिरने लगता है।

शिखी कभी कोई अपराध नहीं किया था। बन सके उतना ही यह घर में विनय और नम्रता से रहता था। परन्तु पूर्व के किन्हीं कर्मों के विपाक स्वरूप वह अपनी माता को प्रसन्न रख नहीं सका था। वह माता की आंख में कण जैसा रगड़ रहा है ऐसा उसने एक बार ही नहीं अपितु हजार बार अनुभव किया था। दूसरा कोई होता तो रात-दिन जलते हुए इस घर में से कभी का निकल कहीं भाग जाता। परन्तु शिखी से ऐसा नहीं हो सकता था। वह दुर्बलहृदयी है इसलिए नहीं निकल सकता है यह बात भी नहीं थी। माता जितनी ही कठोर और निर्मम थी, पिता उसके प्रति उतने ही मृदु और सहृदय थे। पिता के कोमल हृदय को आघात लगेगा इस भय से शिखी घर छोड़ने का साहस नहीं कर सकता था।

शिखी ऐसा विनम्र और निर्दोष है कि उसको देखते ही कोई भी पातृहृदय ममता अनुभव किये बिना नहीं रह सकता था। एक मात्र शिखी की माता ही इसमें अपवादरूप थी। दैव के दुर्विपाक की यह अंतिम सीमा ही कही जा सकती है।

ब्रह्मदत्त और जालिनी दोनों कुलीन वंश के थे। याने किसी कुल-संस्कार ने ऐसा वैशम्य उपस्थित कर दिया होगा, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता था। दोनों के पिता कोश नगर के लोकप्रिय मंत्री थे। ब्रह्मदत्त और जालिनी में भी प्रेम का कोई अभाव नहीं था। संसार के बहुत से प्रसंगों में दोनों एकमत थे। मात्र शिखी को जब भी बात निकल जाती तो जालिनी बाघिनी की प्रकृति ही दिखाती थी।

इसका जन्म हुआ तभी से माता उससे अप्रसन्न रहती रही थी। उसने इसको त्याग देने का भी बहुत प्रयत्न किया था और यह प्रयत्न कुछ अंश में सफल भी हो गया था। परन्तु त्यक्त पुत्र फिर से दत्तकरूप से अपने घर में आया है यह तदबीर प्रगट हो ही गई तो उसे बहुत ही क्रोध आया। तबसे लेकर आज तक एक दिन ऐसा नहीं गया था कि जब इसने पुत्र का एकदम बहिष्कार करने को अपने पति से आग्रह नहीं किया हो। ब्रह्मदत्त भी अब

जालिनी के इस दुराग्रह से पूरा पूरा तंग आ गया था। उसकी स्थिति सरोते के बीच सुपारी जैसी थी।

एक दिन जालिनी ने अंतिम धमकी दे ही दी कि जो तुम इस शिखी को इस घर में से नहीं निकाल देते हो तो यह बराबर समझ लेना कि एक दिन किसी तालाब में, कुएं में, अथवा नदी के गहरे गर्त में इस जालिनी का शव आप देखेंगे।

ब्रह्मदत्त ने यह धमकी भी प्रति दिन दी जाती धमकियों जैसे ही सुन ली। परन्तु शिखी ने जैसे ही यह बात सुनी उसी क्षण उसे ऐसा लगा कि प्रतिदिन जहां अप्रीति पैदा होती हो, विद्वेष घुलता जा रहा हो और आत्महत्या करने तक की धमकी दी जाती हो उस घर में रहने से कोई लाभ नहीं है। अवश्य ही पिता का कोमल हृदय कांप उठेगा। परन्तु यह तो अनिवार्य है। यदि कभी अवसर मिला तो पिता के पैरों में मस्तक नमाकर मैं अपने अविनय की क्षमा मांग लूंगा।

अतः शिखी घर से निकल ही पड़ा। किसी महान् हेतु से उसने घर त्याग नहीं किया था। कहां जाना है, कहां पहुंचकर क्या करना है, यह भी कुछ निश्चित नहीं था। ऊपर आकाश और नीचे धरती के सिवा उसको अभी कोई भी आधार नहीं था। साथीहीन, मित्रहीन, आत्मीय जन से धुत्कारा हुआ शिखी एकांत मार्ग में जाते-जाते क्या विचार करता होगा?

उसको क्या ऐसा नहीं होता होगा कि विश्व में जब छोटे से छोटा जंतु तक भी, माता की गोद में आश्रय पाता है। सर्व दुःख और भय, एक मात्र माता की गोद में सिर छुपाकर भूले जा सकते हैं। मात्र शिखी ही ऐसा दुर्भागा क्यों है?

किसी भी प्रकार से उसके मन का समाधान नहीं होता था। सामने विशाल अरण्य फैला था। कहां कौन उसे आश्रय देगा? बेटा, तू आया ऐसा कहते अपार्थिव स्नेह से उसे कौन सिंचित करेगा?

संसार में अकेले पर्यटन करने जितनी योग्यता अभी उसमें नहीं आई थी। भूख-प्यास सहने को वह तैयार था। परिश्रम का सामना करते हुए हार जानेवाला भी वह नहीं था। भय वह जानता ही नहीं था। मात्र एक पतला अदृश्य स्नेहतंतु जो सबको फिर से घर पहुंचने को सतत् खींचता है, निराशा में आशा और उत्साह भरता है, बस वही उसका तंतु टूट गया था। शिखी जैसे संस्कारी किशोर की आंखों के आगे अंधकार फैला हुआ था।

कितने ही दिनों के भूखे-प्यासे शिखी को एक दिन अकस्मात् वृक्ष की छाया के नीचे, सूखा तृण भी त्रस्त न हो ऐसी शांति से बैठे एक मुनिराज के दर्शन हुए। तपस्वी के तपतेज से वृक्ष के चारों ओर का वातावरण देवमंदिर का आभास उत्पन्न कर रहा था। शिखी स्वयं निर्मल अंतःकरण का था। तपस्वी की तेजस्विता और पवित्रता से आकर्षित हो, वह उनके चरणों के पास विनम्र भाव से बैठ गया।

मानव स्वभाव के पारगामी, अंतर-रोम के वैद्य इन तपस्वी को इस किशोर को देखते ही, ऐसा लगा कि वह मानो कोई जन्म दुःखी वह हो। उसके तपे हुए तामवर्ण जैसे लाल कपोलों पर सूर्य के प्रखर किरणों के सिवा किसी का मृदु-स्नेहसुकुमार हाथ कभी फिरा हो, ऐसा उन्हें नहीं लगा।

वत्स! कच्ची वय में क्या बहुत दुःख आ पड़ा है? वैद्य जैसी ही तटस्थता से तपस्वी उसकी चिकित्सा करने लगे।

अपने दुःख पर रोते रहने का शिखी को अभ्यास नहीं था। परन्तु आज सगे-स्नेहियों के तिरस्कार का पद-पद पर प्रहार अनुभव करनेवाला कुछ रुआंसा हो ही गया।

भगवन्! दुःखी तो हूं ही। पर ऐसा क्यों हुआ? जिस चन्द्रमा से शीतल ज्योत्सना झरनी चाहिए, उसके स्थान से आग कैसे बरस जाती होगी? माता की गोद दुःखियों का एकमात्र विश्राम मानी जाती है, मात्र मेरे लिए ही

वह उबलते तेल जैसी कढ़ाई क्यों बन गई? मैंने कभी कोई अपराध नहीं किया, फिर भी मैं इतना दुर्भागी क्यों? शिखी को अपने सारा जीवनवृत कह देने का मन हुआ। परन्तु जो कहने का था वह तो सब कहा जा चुका है ऐसा लगने से वह मौन हो गया।

देखो बेटा, संसारचक्र तो अपनी नियत गति से फिरता ही रहता है। मात्र हम बबूल बोकर भी आम के फल की आशा रख लेते है, इसी से हमें सूर्य में से अंधकार और चंद्र में से अग्नि झरता दीखता है। हम बाहरी कारणों का ही पृथक्करण कर, सुख अथवा दुःख का मूल कारण खोजने का परिश्रम करते है, परन्तु हमारी ओछी दृष्टि कहां, गहराई तक देख सकती है? आज के हमारे हर्ष, शोक, संयोग, वियोग और राग, द्वेष आदि में जन्मजन्मांतर की हमारी कितनी अच्छी-बुरी भावनाएं अपना काम कर रही हैं? परन्तु ज्ञानी के सिवा कौन इस गूढ़ भेद को हम पर प्रगट कर सकता है?

शिखी के मन का इतने से समाधान नहीं हुआ।

तेरे से कोई अधिक दुःखी होगा ऐसा तुझे नहीं लगता है ना? तपस्वी ने स्नेह मिश्रित स्वर से पूछा।

आप ही कहें। संसार के सनातन नियमों को भी जो असत्य करे ऐसा मेरे सिवा कौन दूसरा है। माता के वात्सल्य का संसार सनातन नियम समझनेवाला शिखी, अपने पूर्व के प्रश्न की ही पुनरावृत्ति करता रहा।

संसार के नियमों को समझने में हमारी बुद्धि कहां तक पहुंच सकती है? अधिक से अधिक बाहर के स्थूल निमित्तों को पकड़कर ही तो वह सबकुछ निर्णय करती है। परन्तु जब इसमें वह ठगा जाती है तो हम भारी उलझन में गिर जाते हैं। जीवन के स्वतंत्र सुख दुःखों के पीछे अनेकानेक जन्म-मरण की, राग द्वेष की, ईर्ष्या और वैर की परम्परा लगी होती है और उसे हम पकड़ नहीं सकते हैं। इसीलिये संसार के नियम हमारे संबंध में असत्य होते दीखते हैं। कर्म और उसका विपाक इस जीवन का कितना बड़ा सूत्रधार है? यह हमें पता ही नहीं है।

क्रम-क्रम से तपस्वी ने शिखी को संसार का स्वरूप समझाना शुरू किया। इस संसार में सब कोई अकेला है और अकेला को ही आत्म कल्याण भी साधना है, यह बात उन्होंने उसे अच्छी तरह समझाई।

शिखी के निर्मल, विकसित अंतर में यह उपदेश आर-पार उतर गया। थोड़ी देर में ही शिखी कुछ अधिक स्वस्थ हो गया और उसको अधिक स्थिर करने को तपस्वी ने सर्वज्ञ से जानी हुई अपने ही गत भवों की रूपरेखा उसके सामने खींचना शुरू किया।

स्नेही माताओं के हृदय में भी लोभ के कारण कैसी दुर्बुद्धि आती है इसका उन्होंने अपने वर्तमान जीवन की एक घटना द्वारा उसे दिग्दर्शन कराया:

यद्यपि माता के हाथों से भी गुप्त रीति से विष दिया जाता है, फिर भी माता तो उसमें निमित्त मात्र ही होती है। माता के स्वरूप में जन्म-जन्मांतर का पुराना द्वेष ही मूर्त होता है और ऐसे समय में भी भव्यात्माएं तो अपने शुद्ध स्वभाव में ही स्थित रहती हैं। यह सब सुनकर शिखी ने मुक्ति का छोटा सा विश्वास फैका।

शिखी अब आश्वस्त हो गया कि संसार में वही एकमात्र दुःखी और दुर्मार्गी है, उसकी यह धारणा निराधार है। मात्र घटना का गर्भित अर्थ समझ में आना चाहिए और उसके कारणों को निर्मूल करने को कटिबद्ध होना चाहिए। शिखी को जीवन की ओर देखने की यह दृष्टि इस तपस्वी से प्राप्त हो गई।

क्रमशः

अकेला

भूरचन्द जैन

चेतन नगरी में सेठ चेतनदास रहते थे। आर्थिक दृष्टि से वे अत्यन्त ही समृद्धशाली थे। उनके पास धन सम्पदा का अभाव नहीं था। खूब जमीन जायदाद थी। साधन सुविधाओं की भरमार थी। उनकी पत्नी का नाम सुशीला था। दोनों पति पत्नी सुखी जीवनयापन कर रहे थे।

सेठ चेतनदास एवं उनकी धर्मपत्नी सुशीला दोनों ही धर्म आराधना में व्यस्त रहते थे। ईश्वर भक्ति एवं सत्संग इनके जीवन का अंग बन गया था। धर्म आराधना उपासना के साथ वे दीनहीन व्यक्तियों की खूब मदद करते थे। गरीब और असहाय व्यक्तियों के लिए जीवनयापन के कई केन्द्र स्थापित कर दिये थे। बीमारी से पीड़ितों के लिये दवाईयों और उपचार की समुचित व्यवस्था इनके द्वारा की जाती थी। पशु-पक्षियों की रक्षा, उनके पालन पोषण में इन्होंने उदार हृदय से दान दे रखा था। दया और दान इनके जीवन का अमूल्य भाग बन चुका था।

सेठ चेतनदास एवं इनकी पत्नी दोनों शांत एवं गंभीर प्रवृत्ति के साथ बड़े विनम्र एवं विवेकशील होने के कारण समूचे चेतन नगरी एवं आस-पास के क्षेत्रों में इनकी बड़ी ख्याति थी। ये मान-सम्मान के लिये कभी इच्छा भी नहीं रखते थे। लोगों द्वारा इनकी उदारवृत्ति के कारण इन्हें खूब प्यार, मोहब्बत, इज्जत मिलती रहती थी। दोनों इससे बेहद खुश थे और ईश्वर भक्ति, सत्संग मानव सेवा, जीव दया आदि परोपकार के कार्यों में सदैव तल्लीन रहते थे।

सेठ चेतनदास को शादी किये करीबन बीस वर्ष हो चुके थे। लेकिन बच्चा नहीं होने पर भी पति पत्नी कदापि उदास नहीं रहते थे। एक दिन सेठ चेतनदास

प्रातःकालीन ईश्वर भक्ति आदि से निवृत्त होकर अपनी हवेली के झरोखे से नीचे की ओर झांक रहे थे कि उन्होंने देखा कि एक गरीब भिखारी महिला फटे वस्त्रों, बिखरे बालों में अपने नग्न बालक को बड़े ही प्यार दुलार के साथ बार-बार चूम रही थी, आलिंगन कर रही थी और अत्यधिक प्रसन्न होकर बार-बार चूम रही थी। चेतनदास इस दृश्य को देखकर भाव-विभोर हो गये और अपनी पत्नी को यह दृश्य दिखाकर पुत्र की कामना की।

सेठ चेतनदास की पत्नी सुशीला इस दृश्य को देखकर तत्काल समझ गयी कि पतिदेव को पुत्र मोंह ने सता लिया है। वह अपने पति से बोली प्राणनाथ! आपका मन कहां भटक गया है। यदि ईश्वर की कृपा हुई तो पुत्र मिल जायेगा। व्यर्थ का आप मोंह कर्म क्यों बांध रहे हो। पत्नी की बात सुनकर सेठ बोला-सुशीला! आज हमारी शादी के बीस वर्ष बीत गये। मुझे कभी पुत्र मोह का ध्यान नहीं आया। बस आज जब इस भिखारिन के ममत्व को देखकर मुझे लगा कि यदि हमारे पुत्र होता तो हम भी उसे लाड़ प्यार देते और अपने जीवन को खुशहाल बनाते। हमारे बुढ़ापे का सहारा होता।

सुशीला ने कहा- पतिदेव! आप भूल रहे है कि पुत्र होने से सुख मिले और नहीं होने से दुख बढ़ेगा। यह आपका भ्रम है। दुनिया में जिनके पुत्र है वे भी दुःखी है और जिनके पुत्र नहीं है वे भी दुःखी है। संसार में कोई किसी का नहीं है। आप क्यों पुत्र मोह के लिये दुःखी हो रहे हो।

सेठ चेतनदास ने कहा- सुशीला! तुम ठीक कह रही हो लेकिन मुझे अपने वंश का नाम रखने के लिये पुत्र की चाह है। सुशीला समझ गई कि सेठजी को अब पुत्र की अधिक चाह सताने लगी है। सुशीला ने कहा-प्राणनाथ! अब पुत्र के लिये चिन्तित नहीं होवें। अपने किसी पुत्र को गोद ले लेंगे।

दोनों पति पत्नी पुत्र गोद लेने के लिये सहमत हो गये। उन्होंने अपने भाईयों, परिजनों, सम्बन्धियों, मित्रों आदि के सामने पुत्र को गोद लेने का प्रस्ताव रखा लेकिन कोई भी पुत्र मोंह के कारण अपना पुत्र गोद नहीं दे रहा था। आखिर किसी बाल अनाथ आश्रम से पुत्र गोद लाये।

सेठ चेतनदास जिस पुत्र को गोद ले आये उस बालक का नाम पवन था। जिसकी उम्र आठ वर्ष की थी। जो सुन्दर होने के साथ-साथ सुशील था। शांत स्वभाव और विनम्रता उसमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। सेठ चेतनदास एवं सुशीला ऐसे योग्य एवं नैतिक आचरण वाले बालक को पाकर धन्य हो गये। सेठ के परिवार में खुशी का वातावरण बन गया।

सेठ ने पवन के पढ़ने आदि की समुचित व्यवस्था की। घर पर पढ़ाने के लिये एक विधवा अध्यापिका राधिका को नियुक्त किया। दो वर्ष तक बालक पवन सुशीला के साथ इतना घुलमिल गया कि उसे मातृत्व का अपार प्यार मिलने लगा। इस बीच अचानक सेठ की धर्मपत्नी सुशीला का स्वर्गवास हो जाता है। सुशीला के स्वर्गवास के बाद सेठ चेतनदास अपने आपको अकेला अनुभव करने लगते है। क्योंकि बेटा पवन गोद लिया पुत्र था।

सुशीला के स्वर्गवास होने के बाद सेठ चेतनदास को घर बार आदि संभालने की एक गम्भीर समस्या खड़ी हो गई। गोद लिये पुत्र पवन को सुशीला से मिलने वाला प्यार नहीं मिलने से वह भी उदास रहने लगा। सेठ अब पहले पुत्र नहीं होने से चिन्तित था और अब पुत्र होने पर इसकी देखभाल के लिये चिन्तित रहने लगे। परिजनों ने सेठ को अपनी गृहस्थी एवं कारोबार सम्भालने के लिये दूसरा विवाह अध्यापिका राधिका से करने की सलाह दी। राधिका पहले से विधवा थी और दोनों ने शादी कर ली।

सेठ चेतनदास अध्यापिका राधिका के पति बन गये। लेकिन एक वर्ष के अन्दर ही सेठ चेतनदास इस संसार को छोड़कर चल बसे । ऐसी स्थिति में

सेठ की सम्पत्ति पर अध्यापिका राधिका एवं गोद लिये हुए पुत्र का अधिकार था। जो मूल रूप से सेठ चेतनदास के कुछ भी नहीं थे। इतना ही नहीं अब तो राधिका एवं पवन भी एक दूसरे के नहीं होते हुए मां पुत्र बन गये।

राधिका पर सेठ चेतनदास की गृहस्थी का भार आ पड़ा। अपार सम्पत्ति एवं सुख सुविधा के साधनों, जमीन जायदाद की कोई कमी नहीं। लेकिन राधिका इसका एक वर्ष तक भी भोग नहीं कर पाई और इस संसार से सदा-सदा के लिए विदा हो गई। अब पीछे वह बालक पवन था जिसे जन्म के साथ इसके माता-पिता ने छोड़ दिया था ऐसी स्थिति में अकेला था और आज भी अकेला रह गया।

----------O----------

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO
MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

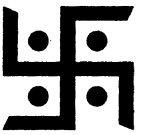

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 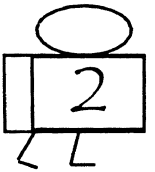 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

All Prices BELOW M.R.P.

FREE HOME DELIVERY

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbu eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road.
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50°C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 4 TITTHAYARA July 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225